

राष्ट्रीय संवाद

जानपुर का जानपुर लखनऊ का लखनऊ नगर संस्करण का संबंधित जानपुर का जानपुर समाजिक शास्त्र के साथ ही सम्भव हो सकता है।

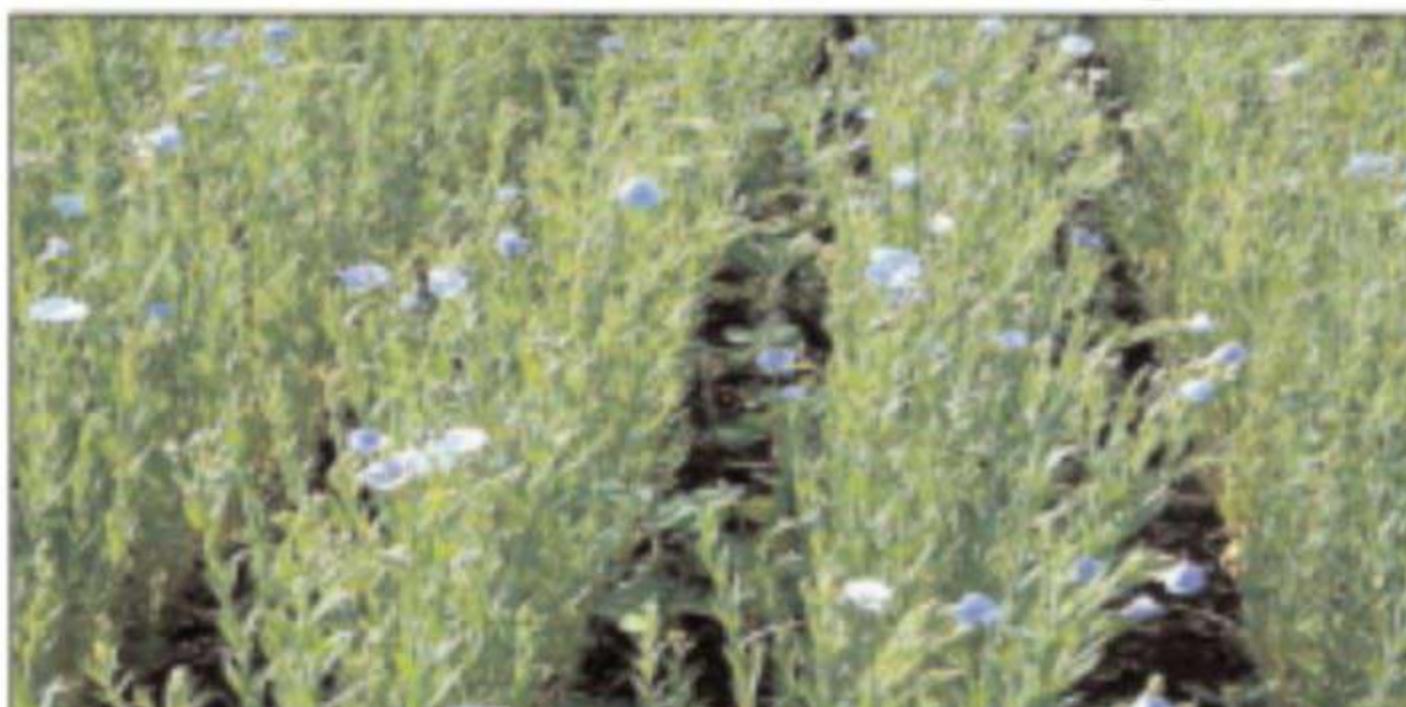
नगदी फायदे के लिए करें अलसी की वैज्ञानिक खेती: डॉ. नलिनी

कानपुर। सोएसए के कुलपति डॉ. डॉ. आर. सिंह के निर्देश के त्रैम में विश्वविद्यालय की अलसी अभिजनक डॉ. नलिनी तिवारी ने किसान भावयों हेतु अलसी की वैज्ञानिक खेती के बारे में एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि भारतीय अर्थव्यवस्था में क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से तिलहनी फसलें खाद्यान्न फसलों के बाद दूसरा महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। भारत में जलवायु की विभिन्नता के कारण कई तिलहनी फसलें उगाई जाती हैं। इन तिलहनी फसलों में गाई एवं सरसों के बाद अलसी का प्रमुख स्थान है। अलसी एक प्रमुख रची तिलहनी फसल है जिस का उत्पादन बीज एवं रेशा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। हमारे देश की अलसी का कुल क्षेत्रफल 2.94 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 1.54 लाख टन एवं उत्पादकता 525 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल उत्पादन एवं उत्पादकता त्रैमात्रा 0.32 लाख हेक्टेयर, 0.17 लाख टन एवं 531 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी की खेती बुंदेलखण्ड क्षेत्र जालीन, हमीरपुर, बांदा, झासी, ललितपुर एवं कानपुर नगर, कानपुर देहात, खसी, प्रयागराज, बाराणसी, मिर्जापुर आदि

में सफलतापूर्वक की जाती है। उन्होंने बताया कि अलसी की खेती वैज्ञानिक एवं अर्बिक दोनों प्रकार से की जा सकती है।

कैरोटीन, धायमीन, राइबोफ्लेविन एवं नाइट्रोन भी होता है। उन्होंने बताया कि अलसी के छिलके में मुएसिटेड होता है

जाती है यह कुल तेल उत्पादन का 80% भाग औद्योगिक कार्बो हेतु पेट चमड़ा, छपाई, स्याही आदि के रूप में प्रयोग की जाती है यह की 20% तेल खाने में इस्तेमाल होता है योज से तेल निकालने के बाद 18 से 20 घंटे प्रोटीन व 3 ल तेल बचता है जो कि जानवरों के लिए पौष्टिक एवं भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के भी काम आती है अलसी की दो उद्देश्य प्रजाति से रेशा प्राप्त किया जाता है यह रेशा मजबूत टिकाक एवं चमकदार होता है इससे मजबूत रस्सी एवं कपड़े बनाए जाते हैं चमकदार रेशा होने के कारण इसे सूती, रेशमी कपड़ों के साथ मिलाकर बस्त बनाए जाते हैं यह इसके साथ ही इसका उपयोग फौज में विभिन्न कार्यों हेतु किया जाता है इसकी लकड़ी के टुकड़ों से लुकड़ी बनाकर अच्छी गुणवत्ता वाले कागज तैयार किए जाते हैं। विश्वविद्यालय ने अलसी की बीज वाली प्रजातियों एवं दो उद्देश्य प्रजातियों विकसित की गई है यह किसान भाई इनका प्रयोग अपने खेत में करके अपनी आय को पढ़ा सकते हैं। उन्होंने किसान भाईयों को मलाह दी कि बीज उद्देश्य प्रजातियों दंड, डमा, सूर्य, शेखर, अपर्ण, शीला, सुधा, गरिमा आदि है जबकि दो उद्देश्य हेतु शिखा, रश्मि, पार्वती, रुचि, राजन एवं गीरथ हैं।



इस समय अलसी की बुवाई का समय चल रहा है किसान भाई 20 नवंबर तक अलसी की बुवाई कर सकते हैं। किसान भाई इसे असीचित, सिंचित दस्ता में अलसी के बीज की बुवाई कर दें। अलसी के बारे में गांधी जी ने कहा था कि जिस घर में अलसी का सेवन होता है वह घर निरोगी होता है। अलसी के बीज में तेल 40 से 45%, प्रोटीन 21%, खनिज 3%, कार्बोहाइड्रेट 29%, कर्जा 530 किलोग्राम कैलोरी, कैलिशाम 170 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम, लोहा 370 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम इसके अलावा

जिससे सर्दी, जुखाम, खांसी एवं खराय में फायदा होता है। अलसी में लिंगेन नामक एंटीऑक्सीडेंट होता है जो कि एक प्लांट एस्ट्रॉजेन होता है यह कैंसर रोधी होता है तथा दयुमर की ग्रोथ को रोकता है। अलसी के बीज में खाद्य रेशा भी होता है यह कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल कर हृदय घाट रोकने एवं गठिया के निदान में उपयोगी है यह खिलादियों के मांस पेशियों के खिंचाव एवं दर्द में भी अलसी के तेल का प्रयोग किया जाता है हमारे देश में अलसी की खेती मुख्य बीज से तेल प्राप्त करने के लिए की

नकदीफायदेकेलिएकरें, अलसीकीवैज्ञानिकखेती: डॉ. नलिनी

अनिल मिश्रा (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में विश्व विद्यालय की अलसी अभिजनक डॉक्टर नलिनी तिवारी ने किसान भाइयों हेतु अलसी की वैज्ञानिक खेती के बारे में एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि भारतीय अर्थव्यवस्था में क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से तिलहनी फसलें खाद्यान्न फसलों के बाद दूसरा महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं भारत में जलवायु की विभिन्नता के कारण कई तिलहनी फसलें उगाई जाती हैं इन तिलहनी फसलों में राई एवं सरसों के बाद अलसी का प्रमुख स्थान है अलसी एक प्रमुख रवी तिलहनी फसल है जिस का उत्पादन बीज एवं रेशा प्राप्त करने के लिए किया जाता है डॉक्टर तिवारी ने बताया कि अलसी के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से भारत का विश्व में क्रमशः तृतीय एवं पंचम स्थान है क्षेत्रफल में भारत का स्थान चीन के साथ एवं कनाडा के



में अलसी का सेवन होता है वह घर निरोगी होता है। अलसी के बीज में तेल 40 से 45%, प्रोटीन 21%, खनिज 3%, कार्बोहाइड्रेट 29%, ऊर्जा 530 किलोग्राम कैलोरी, कैल्शियम 170 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम, लोहा 370 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम इसके अलावा कैरोटीन, थायमीन, राइबोफ्लेविन एवं नाएसीन भी होता है उन्होंने बताया कि अलसी के बुवाई का समय चल रहा है किसान भाई 20 नवंबर तक अलसी की बुवाई कर सकते हैं। किसान भाई इसे असिंचित, सिंचित दशा में अलसी के बीज की बुवाई कर दें अलसी के बारे में गांधी जी ने कहा था कि जिस घर

ग्रोथ को रोकता है। अलसी के बीज में खाद्य रेशा भी होता है जिसके कारण कब्ज एवं शरीर के रक्त में शर्करा के स्तर को नियमित करने में सहायक एवं कोलेस्ट्रॉल को कम करने में सहायक होता है। अलसी से प्राप्त प्रोटीन में सभी एमिनो एसिड पाए जाते हैं इसके बीज में ओमेगा 3 एवं ओमेगा 6 वसा अम्ल भी होते हैं वरुमहं-3 हमारे शरीर में संश्लेषित नहीं होता है अतः हमें अलसी खाकर इसकी आपूर्ति करनी पड़ती है ओमेगा 6 से बुद्धि एवं स्मरण शक्ति, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है स यह कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल कर हृदय घाट रोकने एवं गठिया के निदान में उपयोगी है स खिलाड़ियों के मांस पेशियों के खिंचाव एवं दर्द में भी अलसी के तेल का प्रयोग किया जाता है हमारे देश में अलसी की खेती मुख्य बीज से तेल प्राप्त करने के लिए की जाती है कुल तेल उत्पादन का 80% भाग औद्योगिक कार्यों हेतु पेंट चमड़ा, छपाई, स्थानी आदि के रूप में प्रयोग की जाती है बाकी 20% तेल खाने में इस्तेमाल होता है स बीज से तेल देहादून, शनिवार 05 नवंबर, 2022

नकदी फायदे के लिए करें अलसी की वैज्ञानिक खेती: नलिनी



कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डॉ. आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश क्रम में आज विश्वविद्यालय की अलसी अभियनक डॉक्टर नलिनी तिवारी ने किसान भाइयों हेतु अलसी की वैज्ञानिक खेती के बारे में एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि भारतीय अर्थव्यवस्था में क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से तिलहनी फसलें खाद्यान्न फसलों के बाद दूसरा महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। भारत में जलवायु की विभिन्नता के कारण कई तिलहनी फसलें उगाई जाती हैं। इन तिलहनी फसलों में राई एवं सरसों के बाद अलसी का प्रमुख स्थान है। अलसी एक प्रमुख रवी तिलहनी फसल है जिस का

उत्पादन बीज एवं रेशा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। डॉक्टर तिवारी ने बताया कि अलसी के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से भारत का विश्व में क्रमशः तृतीय एवं पंचम स्थान है क्षेत्रफल में भारत का स्थान चीन के साथ एवं कनाडा व कजाकिस्तान के बाद आता है। जबकि उत्पादन में कनाडा, कजाकिस्तान, चीन एवं यूएसए के बाद आता है। हमारे देश की अलसी का कुल क्षेत्रफल 2.94 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 1.54 लाख टन एवं उत्पादकता 525 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल उत्पादन एवं उत्पादकता क्रमशः 0.32 लाख हेक्टेयर, 0.17 लाख टन एवं 531 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी की खेती



बढ़ती है यह कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल कर हृदय घाट रोकने एवं गठिया के निदान में उपयोगी है। खलाड़ियों के मांस पेशियों के खिंचाव एवं दर्द में भी अलसी के तेल का प्रयोग किया जाता है हमारे देश में अलसी की खेती मुख्य बीज से तेल प्राप्त करने के लिए की जाती है। कुल तेल उत्पादन का 80 प्रतिशत भाग औद्योगिक कार्यों हेतु पेट चमड़ा, छपाई, स्याही आदि के रूप में प्रयोग की जाती है बाकी 20 प्रतिशत तेल खाने में इस्तेमाल होता है। बीज से तेल निकालने के बाद 18 से 20 प्रतिशत प्रोटीन व 3 प्रतिशत तेल बचता है जो कि जानवरों के लिए पौष्टिक एवं भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के भी काम आती है। अलसी की दो उद्देश्य प्रजातियां रेशा एवं स्मरण शक्ति, रोग प्रतिरोधक क्षमता

एवं चमकदार होता है इससे मजबूत रसी एवं कपड़े बनाए जाते हैं चमकदार रेशा होने के कारण इसे सूती, रेशमी कपड़ों के साथ मिलाकर वस्त्र बनाए जाते हैं। इसके साथ ही इसका उपयोग फौज में विभिन्न कार्यों हेतु किया जाता है इसकी लकड़ी के टुकड़ों से लुगदी बनाकर अच्छी गुणवत्ता वाले कागज तैयार किए जाते हैं। विश्वविद्यालय ने अलसी की बीज वाली प्रजातियां एवं दो उद्देश्य प्रजातियां विकसित की गई हैं। किसान भाइ इनका प्रयोग अपने खेत में करके अपनी आय को पढ़ा सकते हैं। उन्होंने किसान भाइयों को सलाह दी कि बीज उद्देश्य प्रजातियां इंदु, उमा, सूर्या, शेखर, अपर्णा, शीला, सुधा, गरिमा, आदि हैं जबकि दो उद्देश्य हेतु शिखा, रशिम, पांवती, रुचि, राजन एवं गौरव हैं।



टेली-विदेश

लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

उत्तर प्रदेश

हिमाचल में कांग्रेस पर वरसे मोदी... 12

आरएसएस गुरुकुल अकादमी में प्रतिभा की घनी... 10



लखनऊ

पृष्ठ: 14 | ॐ: 26

मूल्य: ₹ 3.00/-

पेज: 12

टीका | 06 जनवरी, 2022

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews

janexpresslive

janexpresslive

www.janexpresslive.com/epaper

छात्र-छात्राओं को दी पाठ्यक्रमों की जानकारी

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग में शनिवार को नवागंतुक परास्नातक एवं शोध छात्र छात्राओं के लिए एक

दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम हुआ। विभागाध्यक्ष डॉ. आर.के. यादव ने छात्र-छात्राओं को पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि परास्नातक छात्र-छात्राओं को फुल 70 क्रेडिट पढ़ना होगा जिसमें 40 क्रेडिट कोर्स एवं 30 क्रेडिट थीसिस कार्य करना है तथा पीएचडी के छात्र-छात्राओं को 100 क्रेडिट पढ़ना होगा। जिसमें 25 क्रेडिट कोर्स एवं 75 क्रेडिट थीसिस के होंगे। इस अवसर पर नव आगंतुक छात्र छात्राओं के विषयों से संबंधित विभिन्न शंकाओं का शिक्षकों द्वारा समाधान किया गया। कार्यक्रम में अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. धर्मराज सिंह, डॉ. मनोज कटियार, डॉ. शेता यादव, डॉ. महक सिंह, डॉ. नलिनी तिवारी मौजूद रहे।



राष्ट्रीय स्वस्थ

परास्नातक एवं शोध छात्र छात्राओं का हुआ ओरिएंटेशन

कानपुर। सीएसए के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग में आज नवागंतुक परास्नातक एवं शोध छात्र

छात्राओं हेतु एक दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम संपन्न हुआ।

विभागाध्यक्ष डॉ आरके यादव ने छात्र-छात्राओं को पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रमों के बारे में विस्तार से छात्र

छात्राओं को विस्तार से जानकारी दी। इस कार्यक्रम में उन्होंने बताया कि परास्नातक

छात्र-छात्राओं को फुल 70 क्रेडिट पढ़ा होगा जिसमें 40 क्रेडिट कोर्स एवं 30

क्रेडिट थीसिस कार्य करना है। इसी प्रकार से उन्होंने पीएचडी के छात्र छात्राओं को बताया कि उन्हें 100 क्रेडिट पढ़ा होगा जिसमें 25 क्रेडिट कोर्स एवं 75 क्रेडिट

थीसिस के होंगे।

इस अवसर पर नव आगंतुक छात्र छात्राओं के विषयों से संबंधित विभिन्न

शंकाओं का शिक्षकों द्वारा समाधान किया गया। इस अवसर पर अधिष्ठाता कृषि

संकाय डॉक्टर धर्मराज सिंह, डॉ मनोज कटियार, डॉक्टर श्वेता यादव, डॉक्टर महक

सिंह, डॉक्टर नलिनी तिवारी, डॉक्टर गीता राय, डॉक्टर संजय सिंह, संजय पाठक एवं विवेकानंद यादव सहित अन्य शिक्षक एवं अधिकारी उपस्थित रहे।

अमर उजाला 06/11/2022

नवागत छात्रों को कास परिषदी जनिकारी दी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग में शनिवार को परास्नातक और शोध के नवागत छात्रों का ओरिएंटेशन कार्यक्रम हुआ। विभागाध्यक्ष डॉ. आरके यादव ने बताया कि परास्नातक छात्रों को फुल 70 क्रेडिट पढ़ना होगा, जिसमें 40 क्रेडिट कोर्स और 30 क्रेडिट थीसिस के होंगे। पीएचडी के छात्रों को 100 क्रेडिट पढ़ना होगा, जिसमें 25 क्रेडिट कोर्स और 75 क्रेडिट थीसिस के होंगे। इस मौके पर डॉ. धर्मराज सिंह, डॉ. नलिनी तिवारी, डॉ. गीता राय, डॉ. संजय सिंह, संजय पाठक आदि मौजूद रहे। (संवाद)



(हिन्दी दैनिक)

R.N.I. No. Utthin/2018/76731

दिव्यामृत दुर्लभ

उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश से एक साथ प्रसारित

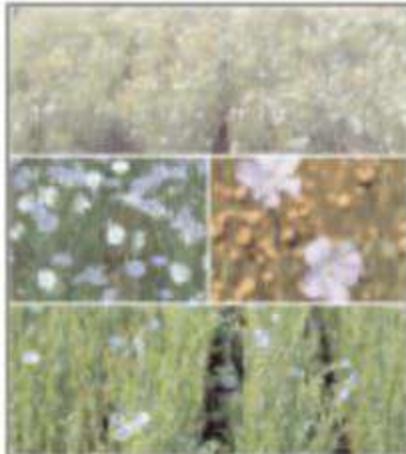
वर्ष : १४ अंक ३१

टेलिकॉम, दिल्ली, 6 जून 2022

मुख्य : १ लाखी फा - ८

नगदी फायदे के लिए करें, अलसी की वैज्ञानिक खेती... डॉक्टर नलिनी तिवारी

चंद्रसेतुर उत्तर कृषि एवं प्रौद्योगिकी
विधायिकामान कानूनसु के कठुनावीत लोकटर
में जर, मिरा द्वारा उत्तरी निर्देश के ऋग में
उत्तर विधु निर्देश की अलाइ अधिनियम
लोकटर निर्देश निवारी ने निराम भाषणों हेतु
जालाई कई विहारिनक सोही के बारे में
एकलालभारी जारी की। उन्होंने बताया कि
भाषणीय लोक्याचारिय में खेतरकल एवं
जलादान की दृष्टि से निरामने फसलों राजाग्राम
फसलों के बाट दूसरा महालक्षण म्यान रखा है।
भास्त में जलावधु की विधिवत्त के कालज
बहु निरामने फसलें आई जाती है। इन
निरामने फसलों में यह एक मसलों के बाट
अलाइ का द्रग्युच रखता है। अलाइ एक
प्रमुख रसी निरामने फसल है जिस का
जलादान बीज एवं रोपा प्राप्त करने के लिये
दिया जाता है। लोकटर निवारी ने जलाम कि
अलाइ के खेतरकल एवं जलादान की दृष्टि से
भास्त कर विधु में ऊर्ध्व एवं घनम
म्यान है खेतरकल में भास्त का म्यान चीम
के राम एवं कानाम व कान्हूचित्तकर के बाट
लाल है। जबकि उत्तरान में
कन्नाम, कान्हूचित्तकर, चीम एवं रूपमान के



बहुत नहीं है। उपरोक्त देश की जलसंयोगी का कुल सेवकाल 2.94 लाख हैंडटेक्स तथा उत्पादन 1.54 लाख टन एवं उत्पादकता 525 किलोवाट प्रति हेक्टेयर है। जलमय प्रदेश में जलसंयोगी का सेवकाल उत्पादन एवं उत्पादकता उत्तराखण्ड- 0.32 लाख हेक्टेयर, 0.12 लाख टन एवं 531 किलोवाट प्रति हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में जलसंयोगी की सेवकी भूमिका बहुत अधिक सेवा जलनीज, हमीरपुर, बांका, झज्जरी, महिलापुर एवं कानपुर नगर, कानपुर देहान,

बलात्मी, पुष्पालता जैव, बलात्मा है, मिनीर, अट्टिंग
में सफलतापूर्वक को जाति है। उसने बलात्मा
हि अलामी की गंतव्य उत्तीर्णक एवं अट्टिंगक
तेजें प्रकार से भी जा सकती हैं। इस बलात्मा
बलात्मी की चुवाई का साधन यह है
कि सम्पन्न भाई २० नवंबर तक अलामी की
चुवाई कर सकते हैं। किसान भाई इसे
अतिरिक्त, विशिष्ट दरमा में अलामी के बीच
की चुवाई कर दें।

अलसडी के ग्वारे में गृही जी ने कहा कि जिस पर में अलसडी वा रोमन होता है वह पर लिंगरी होता है। अलसडी के बीच में तोल 40 में 45व, ड्रेटन 21व, रामनिंज 3व, फार्मर्सटार्ट 29व, लार्व 530 लिंगरीद्वय वैल्सडी, वैल्सियाप 170 लिंगरीद्वय पुलि 100 वास, लंडा 370 लिंगरीद्वय प्रीत 100 यास इनके अलाव लिंगरीन, खण्डवीन, राम्बेश्वरीचिन एवं नारायणीन भी होते हैं। उन्होंने कहा कि अलसडी के लिंगरीके में मुख्यमंडेह होता है जिसमें मर्टी, जुलधम, खांसडी एवं साराव में पाये गए होता है। अलसडी में लिंगरीन नामक एकीन्हंसिंहेट होता है जो कि एक प्राचीन एस्ट्रोजन होता है

वह जैसा रोधी होता है जब ट्रॉफेर की ओप को रोकता है। अलग्डी के जीव में राष्ट्र रोड परी की हत्ता में लकड़ी के तंत्र जो नियमित करने में व्यापक एवं कोलेटर्टुल जो काम करने में महत्वपूर्ण होता है। अलग्डी से इस प्रेटीन में राधी प्रिंटे प्रिंट एवं जाते हैं इसके बीच में ऑपेण्ट ३ एवं ऑपेण्ट ६ जबकि अलग्डी भी होते हैं नाइट्रो-३ हमारे लिये महत्वपूर्ण नहीं होता है आगे अलग्डी राष्ट्र के अलग्डी अलग्डी करने पड़ते हैं ऑपेण्ट ६ से चुंडि एवं राष्ट्र शक्ति, दोन प्रतिरोधक रामात यहाँ हिंदू यह कोलेटर्टुल जो काट्रुल जब छाप यह रोकने एवं गतिष्ठ के नियम में उपयोगी हिंदू रिकार्डिंगों के मामं पोलिनो के नियम राष्ट्र एवं दर्द में भी अलग्डी के तेल जो प्रावेग लिया जाता है दूसरी देश में अलग्डी की खेती मुख्य जीव में तेल जास बढ़ने के लिए की जाती है इसके २०८ तेल जास बढ़ने में इस्ट्रेंग्ड

तेलका हैथ बीज से तेल निकालने के बाद 18 मे 20व प्रोटीन व उत्तर तेल बाकी है जो कि जामानों के लिए पौरैस्ट एवं भूमि की अंदर रास्ते बढ़ने के भी काम लानी है यह अलगते को से उंडेस्ट प्रबलति से रेता प्राप्त किया जाता है यह गोद मतभूत निकाल एवं चम्पकाला तेल है इससे मतभूत रास्ते एवं बर्फदे बाहर जाने हैं चम्पकाला रेता होने के कारण इसे मूँह, रेतमी करपाते के साथ मिलाकर उत्तर बनाते जाते हैं इसमें मतभूत ही इसका उत्तरोत्तर पौरैन में विप्रिय बातें हेतु किये जाते हैं इससे लकड़ी के टुकड़े से तुराटी बनाकर अचूक गुणवत्ता वाले करना तो तिथा किये जाते हैं। विद्युतिकाल ने अलगतों की बीज बातों प्रबलतियां एवं ने उंडेस्ट प्रजातीयों किसानित की गई है किसान आँ इनका इतें अपने लोहे में करके अपनी उत्तर बो पढ़ा रखते हैं। उन्होंने किसान खाड़ी को सवाल दिया कि कौन उंडेस्ट प्रजातीयों हृ, ऊर, मूर्छ, तेसर, अरान, गीत, सुध, गीत, अदि है जबकि वे उंडेस्ट हेतु कित्त, रित्य, लकड़ी, लचि, गोलन एवं गौरत हैं।



4

कानपुर न्यूज

www.divertimes.in

DT दीनार टाइम्स

4

कानपुर, शनिवार, 5 नवंबर 2022

कानपुर न्यूज

सीएसए में आजाद अगेता खीरा विकसित

► करीब डेक दशक पहले चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में करीब डेक दशक पहले खीरा की कल्याण हरा प्रजाति विकसित की गई थी। अब दूसरी प्रजाति आजाद अगेता खीरा विकसित की गई है यह प्रजाति डॉक्टर ढोपी सिंह के नेतृत्व में विकसित की गई है जिसमें कई कृषि वैज्ञानिकों ने काम किया है। चंद्रशेखर आजाद कल्याण प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सक भाजी अनुसंधान केंद्र में अभी तक 55 प्रजातियां विकसित की गई हैं जिसमें की खीरे की है दूसरी प्रजाति है।



जी टी एन एन। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में करीब डेक दशक पहले खीरे की कल्याण हरा प्रजाति विकसित की गई थी। अब दूसरी प्रजाति आजाद अगेता खीरा विकसित की गई है यह प्रजाति डॉक्टर ढोपी सिंह के नेतृत्व में विकसित की गई है जिसमें कई कृषि वैज्ञानिकों ने काम किया है। चंद्रशेखर आजाद कल्याण प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सक भाजी अनुसंधान केंद्र में अभी तक 55 प्रजातियां विकसित की गई हैं जिसमें की खीरे की है दूसरी प्रजाति है।

राज्य बीज उप समिति ने किया विमोचित

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कल्याणपुर विभाग में सब्जी अनुभाग के सब्जी उत्कृष्टता केंद्र द्वारा खीरे की आजाद अगेता खीरा नवीन प्रजाति विकसित की गई है। सब्जी अनुभाग कल्याणपुर के अनुभाग अध्यक्ष डॉ ढोपी सिंह ने बताया कि कूलपति डॉ लोअर सिंह के कृतल मार्गदर्शन एवं नेतृत्व के परिणाम स्वरूप सब्जी अनुभाग में विगत 15 बर्षों बाद खीरे की नवीन प्रजाति विकसित हुई है उन्होंने बताया कि राज्य बीज उपसमिति (औद्योगिक फसलें) की 12वीं बैठक अपर मुख्य सचिव उद्धान एवं स्थाय प्रसंस्करण विभाग उत्तर प्रदेश सामन की अध्यक्षता में 28 अक्टूबर 2022 को खीरे की नवीन प्रजाति आजाद अगेता खीरा को विमोचित किया गया।

एक हेक्टेयर में ताई सौ कुंतल उत्पादन होगा

डॉ सिंह ने नवीन खीरे की प्रजाति की विशेषता के बारे में बताया कि इसमें फसल चुवाई के 35 से 35 दिन बाद पहली तुकारई शुरू हो जाती है तथा 60 दिनों में

करीब 4 से 5 साल लगा नई प्रजाति को विकसित करने में

डॉक्टर ढोपी सिंह ने कहा खीरा की नई प्रजाति को विकसित करने में सेवानिवृत्ति शिक्षक एसपी सचान की भूमिका महत्वपूर्ण रही है उनके नेतृत्व में इस खीरे की प्रजाति को विकसित किया गया। उन्होंने कहा कि खीरे को यह प्रजाति धीमे एवं वर्षा जूँ दोनों ही भीसम में उत्तम कर किसान अपनी आय में बढ़ोत्तरी कर सकते हैं। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने बताया कि खीरे की नई प्रजाति विकसित करने वाली कृषि वैज्ञानिकों की टीम को कूलपति ने बधाई एवं उनके उत्तरावल भविष्य हेतु शुभकामनाएं दी हैं।

लगभग फसल पूरी हो जाती है जो कि अन्य प्रजातियों की अपेक्षा यह अगेती है उन्होंने बताया कि इनके फलों का आकार मध्यम तथा औसत वजन 230 से 240 ग्राम के मध्य तथा पौधों की लंबाई लगभग 2 मीटर होती है। पौधों की कृम लंबाई होने के कारण अन्य प्रजातियों की तुलना में लगभग 60ल फलों की संख्या अधिक होती है जिससे उत्पादन लगभग 250 कुंतल प्रति हेक्टेयर लिया जा सकता है। विभागाध्यक्ष डॉ ढोपी सिंह ने कहा कि इस प्रजाति को विकसित करने में कृषि वैज्ञानिक डॉ राजीव डॉक्टर के पी सिंह, डॉ एम आर डाक्टर, डॉक्टर एच जी प्रकाश एवं डॉ एस पी सचान आदि की संयुक्त टीम ने विगत चार-पांच बर्षों के निरंतर खीरों के परिणाम स्वरूप विकसित की गई है।